भगवत् कृपा

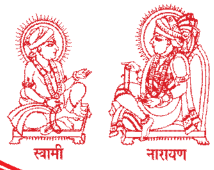

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 5 | 15.9.2003 सोमवार (सितंबर-अक्तुबर) | वार्षिक चंदा : 50.00

अन्नकूटोत्सव...

आइए.....

26 अक्तुबर , रविवार, 2003 की सुबह 11:30 को ‘ ताड़देव ’ मंदिर में

दिव्य गुणातीत कुनबे

के

वार्षिक स्नेहमिलन के साथ

श्री अक्षरपुरूषोत्तम महाराज

एवं

सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को

वार्षिक महाभोग लगा कर आरती होगी...

इस मंगलकारी अवसर पर

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित रहने का

आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान :

श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर

‘ताड़देव’, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

आया.... त्यौहारों - उत्सवों का महीना !

वैदिक काल से भारतीय संस्कृति अपने आँचल में अनेक विविधताएं, पवित्रता, मधुरता, धर्म व भक्ति की जीवंत ख़ानदानी की गरिमा समाए हुए है। आध्यात्मिक समृद्धि के अनमोल खजाने से आज भी भारतीय संस्कृति सुसज्जित श्रृंगार किए हुए है। इसीलिए भारत का नाम विश्व के सभी देशों में गौरव से लिया जाता है। यूं भारत अपने सांस्कृतिक, धार्मिक उत्सवों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है। इन त्यौहारों-उत्सवों द्वारा प्रगटी एक अनोखी उमंग, उल्लास, नवीनता, विश्वास व श्रद्धा हमारे आपसी संबंधों को भी दृढ़ और मंगलमय बनाती है। इन्हीं विशेष त्यौहारों में से अब दशहरा, शरद्पूर्णिमा, दीवाली एवं नये वर्ष के पावन पर्वों की थपथपाहट सुनाई पड़ने लगी है....

दशहरा यानि– आसुरी शक्ति पर भक्ति और दैवी संपदा की जीत... यूं कहें कि राजसी, तामसी प्रकृति-अंहकार का नाश– यानि दशहरा ! गुणातीत समाज के मुक्तों का 'दशहरा' यानि–मायिक मन-बुद्धि के मूल्यांकन, तर्क-वितर्क, आंतरिक व बाहरी भिन्न-भिन्न प्रलोभन, लौकिक-अलौकिक बड़प्पन एवं प्रशंसा-कीर्ति की लालसा पर विजय ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को इसी दिन पार्षदी दीक्षा देकर यह दिन हमारे लिए और भी महत्त्वपूर्ण बना दिया... प्रभुधारक ऐसे समर्थ सारथी की सेरेछाया में ही अंतर्शत्रुओं पर विजय पाई जा सकती है....

दशहरे के पाँच दिन बाद **शरद्पूर्णिमा** का महामंगलकारी दिन यानि–अक्षरब्रह्म के साकार स्वरूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन ! जिनके द्वारा अमर गुणातीत भावना के व्यक्ति स्वरूपों की परंपरा धरातल पर अखंडित चालू रही ! फलस्वरूप कारण व महाकारण के भावों एवं मूल अज्ञान को टाल कर चैतन्यों के लिए आत्यंतिक कल्याण का द्वार हमेशा के लिए खुल्ला रहा। इनके प्रगट होने से ब्रह्मस्वरूप विभूति के रूप में परब्रह्म तत्त्व पृथ्वी पर अखंडित रहा और स्वामिनारायण की-अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध युगल उपासना चिरंजीव रही.... गुणातीत परंपरा शाश्वत् रूप से दिव्य ब्रह्मस्वरूप संतों की पीढ़ी द्वारा अखंडित रही....

गुणातीत अर्थात्– स्थूल-सूक्ष्म-कारण, सत्त्व-रज-तम और जागृत-स्वप्न-सुषुप्ति इन तीन देह-तीनों गुण और तीनों अवस्थाओं से ऊपर उठ कर जीए वो ***'गुणातीत'*** ! स्वयं की आत्मा को तीन देह, तीन गुण, तीन अवस्था से पर शुद्ध चैतन्यब्रह्म–अक्षररूप मान कर अखंड भगवान को रखे वो 'गुणातीत' !

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने धरती पर प्रगट होकर हर एक को– सामान्य कोटि के मानव को श्रीजी महाराज के तत्त्वज्ञान का दर्शन कराने की एकमात्र तान जीवन पर्यंत रखी और जीवों को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ना–वही उद्यम किया ! हर कार्य की चिंता-भार प्रभु के माथे डाल कर जीने की अनुपम सूझ स्वामिश्री ने अपने जीवन से दी... युगों-युगों तक आदर्श रख दिया।

शरद्पूर्णिमा के इस पावन पर्व पर गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को अक्षर मंदिर-गोंडल में–***'जैसी महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को दीक्षा दी थी, वैसी आज प्रभुदास (प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी) को दीक्षा दी जाती है'***– कह कर भागवती दीक्षा दी। दशहरे के दिन पार्षदी दीक्षा और शरद्पूर्णिमा के दिन यूं भागवती दीक्षा देकर गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुणातीत समाज को मानो एक सांकेतिक रहस्य समझाना चाहा है... भगवान अखंड रखे ऐसे गुणातीत पुरुषों के अभिप्राय में यदि हम स्वयं को डुबो देंगे तो हमारा जीवन और हमारा संसार भी अमरत्व और अमृतत्व को पाएगा और इसलिए ऐसी विभूतियों को 'अमृतस्य सेतुः' कह कर नवाजा है ! प.पू. स्वामिजी का जीवन अपने आप ही उपदेश रूप है। उनकी एक ही चाहना है कि हम एक निष्ठा से, महिमा से, लगन से, भक्तिभाव से, केवल गुणातीत स्वरूपों को राजी करने की भावना से भक्तों के आत्मीय बन कर जीवन धन्य करें।

शरद्पूर्णिमा के बाद जीवन में दीप प्रगटाने आई **दीवाली**... भगवानधारक सच्चे संत ही तो हमारे जीवन में **'अखंड दीवाली'** प्रगटा सकते हैं और ऐसे प्रभुधारक संत के सान्निध्य से ही नए वर्ष का आरंभ शुभ एवं मंगलमय होता है....

हम सब पर खूब कृपा करके दीवाली निमित्त प.पू. काकाजी महाराज हर साल 'आशीर्वाद' रूप लेख लिखते... जिसका एक-एक शब्द हमारे जीवन को आज भी प्रकाशमय बनाने ज्ञानदीप प्रज्वलित करता है।

आइये, उन्हीं के शब्दों का मनन करके हम स्वयं ज्योतिर्मय हों !

दीवाली शुभाशीष...

वि. सं.२०३१ की मंगल प्रभात...
काल यानि गुण का क्षोभ और महाकाल यानि गुणातीत का - परमचेतना का संकल्प !
इस महामंगलकारी नई सुप्रभात में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज को साक्षी मान कर दृढ़ आध्यात्मिक संकल्प करें, जिससे कि –
पल पल का हमारा जीवन दिव्य बने, निश्चिंत बने, समृद्ध बने और सहज आनंद प्राप्त होता जाए।
तो,
भूतकाल बिलकुल भूल कर, भविष्य की चिंता छोड़कर, हम सब मिलजुल कर वर्तमान में ही जीयें।
हमारी प्रेरणामूर्ति महाराज, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी व परम एकांतिक को ही बनाएं।
ऐसी एकांतिकी स्थिति की ध्येयसिद्धि की दृढ़ता के लिए –

– मुसलमान जैसे दिन में पांच बार नमाज पढ़ता है, उसी प्रकार पाँच बार एकाग्रचित्त से उसका पुनरावर्तन करें।
– छोटी-बड़ी हर एक क्रिया का आरंभ
  हृदयाकाश में अखंड बिराजमान महाराज, स्वामी और परम एकांतिकों को ही करने दें।
– दिल की सच्चाई से सदा दिव्य साकार स्वरूपों को संपूर्ण सहकार दें।

हमारा मन फाईलिंग क्लर्क है, परंतु ठहराव या निर्णय बुद्धि करती है।
हमारी मान्यता के मुताबिक, हमारे 'स्व' के मुताबिक, हमारे अहम् के मुताबिक वह फैसला करती रहती है।
अब ये फैसले, जिसे हम चैतन्यस्वरूप मानते हों,
उसके प्रति संपूर्ण वफादार रहकर प्रमाणिक रूप से पुकार करके ही करने का दृढ़ संकल्प करें।
उस संकल्प को चिपके रह कर-पकड़े रख कर-दृढ़ता से चिपटे रह कर
गुणातीत के नियम से दिव्य जीवन जीने की शुरुआत करें।
आपस में समकक्ष (मुक्तों) के साथ में सुहृद्‌भाव और मैत्रीभाव का सत्कर्म नियमित रूप से करने लग पड़ें,
तो अमाप शक्ति प्रगट हो उठेगी।

अक्षरधाम का दिव्य सुख, शांति, आनंद और बल हमारे सारे आध्यात्मिक समाज को–
बहनों, संतों, युवकों, गृहस्थों – सभी को हर जगह मिलता रहेगा।
भजन यानि –
मन व प्राण की त्वरित गति से 'स्वामिनारायण' महामंत्र की सतत् जाप से शुरुआत करके,
जिसे हम मानते हों उस स्वरूप में लय होकर, उसमें पूर्णरूप से खो जाकर डीरेक्शनल डाईनेमिज़म खड़ा करके,
चेतना को जाग्रत कर लेना।
अब सजग रहकर सद्‌गुरु के चरणों में शीश झुकाकर दीनता से प्रार्थना करनी कि–
हे प्रभु ! हे महामुक्तों ! केवल आपकी प्रेरणा के मुताबिक पल-पल का जीवन जीना है।
कम से कम इस पल तो जड़ प्रकृति को बिलकुल छोड़कर, दिव्य चैतन्य प्रकृति को ही पकड़ रखें।
'हम सब एक' और **'आप वो मैं'** इस तीव्र भजन को ही चिपके रहें।
ऐसी निर्विकल्प दृष्टि बनाये रखने का यह दृढ़ संकल्प है।
बहुत सचोटता और स्पष्टता से **दिन में पांच बार पांच-पांच मिनिट**
प्रभु की साक्षी में-उनकी हाज़िरी मान कर यह आदत डालेंगे तो ...

– हम जहां हैं वहां से नए ही चैतन्यमय दिव्य जीवन की शुरुआत हो ही जायेगी उसकी गारंटी रखना।
– सचेतन साक्षीभाव, फिर धीरे धीरे अनासक्तभाव और आखिरकार तटस्थभाव –
  व्यवहार में, सत्संग में और सर्व क्रियायोगों में प्रभु की ही लीला का रहस्यदर्शन कराता लगेगा।
– जीवन में आनंद के फव्वारे छूटेंगे।

– संबंधवालों में मैत्रीभाव विकसित करने की इस सहज आदत से
प्रकृति का आमूल रूपांतर होना आसान बन जायेगा।
– स्वभावरहित हो जायेंगे और दिव्य गुण उपलब्ध होंगे।

अंत में निम्न प्रश्नों का खूब बारीकी से विचार करके, स्पष्ट आत्मनिरीक्षण करके जवाब माँगना।
क्या तुम्हें सचमुच पक्का ही है कि प्रत्यक्ष स्वरूप को पहचान कर तुम – उसमें जुड़ गए हो ?
यदि सचमुच जुड़े हो, तो व्यवहार में (किसी के) मोहताज़ रहना नहीं पड़े
और
स्वभावरहित होने में बिलकुल आसानी हो जाये।
वहां जरूर कोई अंतराय है या तो किसी मान्यता का अभिनिवेश है।
प्रभु हमारे मन के संकल्प को जानबूझ कर हमें उसमें झूलने देते हैं। उस भूमिका में आनंद करने देते हैं।
ऊपर बताए मुताबिक तटस्थ निरीक्षण करोगे और बाधारूप बनते स्वभावों के साथ नफरत करोगे कि
'मेरे परम एकांतिक को-मेरे माने हुए स्वरूप को (मेरा) यह स्वभाव नहीं जँचता, सो यह तो चाहिए ही नहीं'–
ऐसी दिल से पुकार करोगे तो तत्काल टल जाएगा ही।
परंतु,
हमें हमारी रीत से, हमारे तरीके से या हमारे मनमाने ढ़ंग से ही भजन, भक्ति, सेवा, समागम करने की आदत पड़ी है।
वह 'भक्ति' तो है, परंतु 'सत्संग' नहीं है। हमारे स्वभाव बढ़ गए और सिद्ध – पक्के हो गए।
यह बात यदि हम समझ लेंगे, भीतर से कबूल करेंगे
और
दिल की गहराई में सच्चाई से स्वरूप को पुकार करेंगे,
तो जरूर जरूर गारंटी से तुम स्वभावरहित हो ही जाओगे। दिव्य जीवन जीते हो जाओगे।
यह अनुभवसिद्ध सिद्धांतिक बात करी है।
आओ,
हम सब मिल-जुल कर आनंद करें। बड़े पुरुषों के गुणगान गाएं। गुरुदेव योगीजी महाराज द्वारा दी मौज को संभालें,
परम सुखी बनें और दूसरों को भी सुखी करें। सभी को ऐसे शुभाशीष हैं।
सभी का शुभम् भवतु। मंगलम् भवतु।

– प.पू. काकाजी महाराज

इस प्रकार अब तो गटर को गंगा बनाने का, कोयले को हीरा बनाने का, अणु को हिमालय जैसा बनाने का, मक्खी को सूर्य बनाने का, जीव को अक्षररूप बनाने का अद्भुत मौका मिला है। सो, सत्संग को स्थूल दृष्टि से ना देखें। मुक्तों के दोष-स्वभाव का मनन-चिंतन ना करके केवल स्वरूप का ही मनन-चिंतन करें। हम से कभी भी संबंध वालों की उपेक्षा ना हो। बल्कि हमेशा प्रार्थना करें कि हे महाराज ! आपके व आपके भक्तों के द्रोह से हमारी सदैव रक्षा करना। जाने-अनजाने में हमने आपका या आपके भक्तों का दिल दुःखा दिया हो तो हमें क्षमा करना। हमारी पल-पल की क्रिया भक्ति रूप बनाना !

प.पू. काकाजी को 'स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव' खूब पसंद... तो चाहे कोई रखे या ना रखे, पर हम इसके लिए **'वन-वे ट्राफीक'** ही रख कर हमारे जीवन में सच्चा उजाला करके गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नतारूप सच्ची दीवाली मनाने कृतनिश्चयी बनें।

✡✡✡

प.पू. काकाजी के दिल की धड़कन– प.पू. दिनकरभाई

ओहो ! अक्तुबर महिने की शुरुआत ही गुणातीत स्वरूप के प्रागट्य से......... यानि– तारीख के मुताबिक **पहली अक्तुबर** और तिथि के मुताबिक **शरद्पूर्णिमा** के महामंगलकारी दिन परम पूज्य दिनकरभाई की जयंती से !

परम पूज्य दिनकरभाई द्वारा धरती पर आज भी प.पू. काकाजी महाराज के प्राण धबकते हैं और अपनी सरलता, विनम्रता, सादगी जैसे अनेक गुणों के कारण गुणातीत स्वरूपों के दिल की प्रसन्नता के वे पात्र बने हैं।

पू. भरतभाई के शब्दों में–
प.पू. दिनकरभाई यानि– माहात्म्य का स्वरुप !
प.पू. दिनकरभाई यानि– अखंडित आध्यात्मिक समता !
प.पू. दिनकरभाई यानि– बेनमून साधुता !
प.पू. दिनकरभाई यानि– प्रभु का दिव्य बालक !
प.पू. दिनकरभाई यानि– ज्ञान का समुद्र !
प.पू. दिनकरभाई यानि– स्वरुपलक्षी, चैतन्यलक्षी सरलता का स्वरुप !
प.पू. दिनकरभाई यानि– आत्मीयता, मैत्रीभाव और सर्वदेशीयता की मूर्ति !
प.पू. दिनकरभाई यानि– निराभिमानी, निर्वेर, निर्दोष व्यक्तित्व !
प.पू. दिनकरभाई यानि– सभी के सुहृद् !
प.पू. दिनकरभाई यानि– प.पू. काकाजी की पहचान !

पर, प.पू. दिनकरभाई को इन दिव्य गुणों, ऐश्वर्य, सामर्थ्य का ज़रा भी भार नहीं–सहज सरल जीवन ! समग्र व्यक्तित्व की आहुति देकर केवल सब का श्रेय करने-मंगल करने के लिए ही इनके जीवन की क्षण-क्षण दिखाई पड़ती है। सुबह सब जगह टेलीफोन पर कॉन्टेक्ट करके आधा पौना घंटा सत्संग की कथावार्ता करके फिर ही ऑफिस जाने निकलते हैं !

प.पू. स्वामिजी की नज़रों में–

'पू. दिनकरभाई की वाणी केवल महिमा प्रधान और दृष्टि केवल संबंध वाली ही ! कभी भी किसी की टीका-चर्चा नहीं, केवल पोझीटिव। ए टु झेड क्लास के मुक्तों के साथ खूब ही प्रेम, विवेक और भक्तिपूर्ण हृदय से बातचीत करते हुए मैंने निहारा है !'

आइए, उनके ऐसे आदर्श रूप दो प्रसंग निहारें....

एक बार प.पू. पप्पाजी 'शिकागो' पधारे थे। प.पू. पप्पाजी का पूजन करना था। पू. दिनकरभाई ने जिस सेवक को कहा था उस सेवक ने चंदन तैयार नहीं किया था। पू. दिनकरभाई सेवक की उस भूल पर जरा भी एक्साईट नहीं हुए, बल्कि खुद चंदन घिसने लगे। इतने में वह सेवक आया और पू. दिनकरभाई से चंदन घिसने मांगा। पू. दिनकरभाई ने बहुत ही सरलता से सेवक को चंदन घिसने दे दिया। फिर भी वह सेवक तो बातें करते-करते चंदन घिस रहा था। इतना सब होने पर भी प.पू. दिनकरभाई के मुँह पर तनिक भी रिएक्शन नहीं था– तनिक भी भावफेर के एक्सप्रेशन्स नहीं थे। प.पू. पप्पाजी बैठे-बैठे यह सारा प्रसंग देख रहे थे। प.पू. दिनकरभाई की सरलता, समता, सेवक में प्रभु के ही कर्ता-हर्तापन की दृष्टि-भावना देख कर वे बहुत अधिक राजी हुए और वहां बैठे-बैठे पू. दिनकरभाई के लिए अंतर की प्रसन्नता जाहिर करते हुए आशीर्वाद लिखे।

सच में प.पू. दिनकरभाई हमें प.पू. काकाजी द्वारा दी गई अद्भुत भेंट हैं। उनके वर्तन से ही उनकी साधुता एवं विनम्रता का दर्शन सहज होता है और हर एक को भीतर तक छू जाता है।

मुंबई की मूर्तिप्रतिष्ठा के बाद पू. दिनकरभाई दिल्ली पधारे थे। दिल्ली में रहते शिकागो के किसी भक्त के रिश्तेदार के घर पर पू. दिनकरभाई पधरामनी के लिए गए। वहां इतनी गंदगी थी कि हमें यदि वहां कोई 15 मिनिट भी बैठने को कहे तो हम बैठने तैयार ही ना हों। पर, पू. दिनकरभाई वहां करीब चार घंटे आराम से बैठे रहे और उनकी बातें सुनते रहे। पू. प्रभाकरभाई भी साथ में थे। मंदिर आकर वे बोले कि– सच में प.पू. दिनकरभाई की पेशेन्स गजब की है। मैंने इतना स्टेबल व्यक्ति अपनी जिंदगी में अब तक नहीं देखा। ही इज़ लाईक एन आईसबर्ग !

हे दिनकरभाई ! अब तो आपकी तरह प.पू. काकाजी को खूब जँचती 'संबंध' वाली दृष्टि रख कर दिव्य जीवन जीने की राह पर हम भी अग्रसर हों–ऐसा संकल्प आप हमारे लिए जरुर करना !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* सरदार पटेल एवं महात्माजी ने गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज से भारत की आज़ादी के सिलसिले में प्रार्थना करी, तब शास्त्रीजी महाराज ने कहा कि हमारे योगीजी महाराज ग्यारह माला फिराएंगे तब जाकर 25 साल के बाद देश को आज़ादी मिलेगी... और ठीक 25 साल के बाद देश को आज़ादी मिली। यह पूरा प्रसंग प.पू.काकाजी के पिताश्री डॉ. नाथाभाई की डायरी में तारीख सहित लिखा हुआ है। दूसरा कोई माने या न माने, पर हम तो मानें कि देश को आज़ादी गुरुहरि योगीजी महाराज के भजन से ही मिली है। **बड़े संत जो कहते हैं, वह बात वैसी ही है – यह माने उसे 'विश्वास' कहा जाए।**

* प.पू. काकाजी अपनी परावाणी में बोले कि सब गुरुओं को पहले नाईट्रिक एसिड में डालो। यानि– तुम्हारी तसल्ली पूरी तरह कर लो। अंधविश्वास से मत जुड़ो। **वे खरे उतरें फिर वहां अटल विश्वास से जुड़ जाओ। पर, पक्की प्रतीति होने के बाद शरणागति टोटल होनी चाहिए। वह कन्डीशनल भी नहीं... पार्शीयल भी नहीं।**

* गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज ने हमें सच्चे गुरुओं की परंपरा दी है।

* प.पू. काकाजी ने एक बड़ा रहस्य बताया कि तुम अगर सच्चाई से मेरे साथ संबंध करोगे, तो आऊट एण्ड आऊट, मैं हमेशा तुम्हारा टोटली रहूँगा। अगर तुम मेरे साथ बनावट करोगे तो मैं डबल झूठा !

* हम सब अक्षर के मुक्त ही हैं। पर, कभी-कभी हमारी कॉन्सशियसनेस एकदम लो लेवल पर आ जाती है। सो, तेरा-मेरा – फलां ऐसा व फलां वैसा के चक्कर में से हम बाहर निकलने ही तैयार नहीं होते। जैसे प्लेन कई बार एकदम नीचे धम्म से आ जाता है।

* कीमती हीरा यदि गटर में गिर जाए तो क्या हम उसे छोड़ देंगे ? उसे ठीक से धोकर साफ कर लेंगे। ठीक उसी प्रकार संबंध वाले सभी अक्षरधाम के मुक्त ही हैं – हाँ, स्वभावयुक्त होंगें .... पर साधु जब हमारे उन स्वभाव, हमारी वृत्तियों की घिसाई करते हैं, तब हमें तकलीफ होती है।

* प.पू. काकाजी ने सात साल की आयु में जब प.पू. पप्पाजी से स्वर्ग धरती पर उतारने की बात करी तब प.पू. पप्पाजी ने बताया था कि स्वर्ग में 'तेरा-मेरा' नहीं होता। **प.पू. काकाजी ने जीवन की आखिरी सांस तक तेरा-मेरा कभी नहीं रखा। सब केन्द्र उनके लिए उनके अपने थे !**

* प.पू. काकाजी ने करामात बताई कि हमें सर्वोपरि प्रभु मिले हैं, पर हमें इसके गरूर में भी नहीं रहना है। हम जितने छोटे रहेंगे, उतना अधिक बड़प्पन हमें मिलेगा। **छोटे रहना मतलब झुक-झुक कर हाथ जोड़ कर दिखावा करना–वो नहीं,** वह तो ढोंगबाजी है। परंतु दिल की सच्चाई से मानना कि हम छोटे हैं। तब प्रभु अपने आप हमें बड़प्पन देंगे। अगर हम बड़प्पन लेने की कोशिश में रहेंगे, तो कभी नहीं मिलेगा।

* मान छोड़ कर जीना है-निर्मानी रहना है। पर, हमें तो थोड़ी-थोड़ी देर में हर्ट हो जाता है। हम घर से यहां आए थे तो क्या मान पाने आए थे ? यहां आकर हमारी दिशा-गोल बदल गया !

* हम निर्मानी होने का दिखावा करते हैं। सच्चा निर्मानी वो– जो दूसरों को सहज मान दे पाए। दूसरों की – और उसमें भी **समकक्ष साथी की प्रशंसा होने पर हम दिल से खुश हों, तो समझना कि हम सच्चे निर्मानी हैं।** पर अलग-अलग लेवल पर हमारा ईगो बीच में आ जाता है।

* हम किसी की प्रशंसा सह नहीं पाते – बर्दाश्त नहीं कर पाते। हमारा मान हर्ट हो जाता है और हम किसी भी तरह चालाकी से दूसरों की नज़र में उस व्यक्ति को गिराने की कोशिश में लग जाएंगे। असल में यह हमारा मान है। यदि सच में **हम अगर पू. काकाजी के होंगे तो** जहां हम सह नहीं पाते होंगे, **हम भजन करने बैठ जाएंगे कि – 'हे महाराज मेरा यह निकाल दो ना ! हे महाराज ! मुझे बल दो कि मेरी यह ब्लॉकेज निकल जाए...'** अगर यह ब्लॉकेज निकालने हम प्रार्थना नहीं करेंगे और वह बढ़ती गई तो एक दिन ऐसा आएगा कि पू. काकाजी की बात भी हमें जँचेगी नहीं। सो, यह **'केंसर'** भीतर में हम ना फैलने दें ।

* हम तो प्रभु को कहते हैं कि प्रभु हमारी मर्जी के मुताबिक आप चलो। हम कैसे सेवक ? अरे ! प्रभु की मर्जी के मुताबिक तो हमें चलना है।

* 'संगत' बहुत मायने रखती है। जैसे एक शेर का बच्चा भेड़ों के बीच थोड़े दिन रहा तो वह भेड़ जैसे ही डरपोक स्वभाव का हो गया.... जैसी संगत में हम रहेंगे, जहां हमारी उठक-बैठक रहेगी वैसी ही हमारी सोच रहेगी। भेड़ की संगत क्या ? **'फलां तो ऐसा है – फलां तो वैसा है...ऐसा हुआ इसलिए ऐसा किया...इधर की बात उधर, उधर की बात इधर वगैरह'** –बस यही धंधे जो करते रहें वह **भेड़ की संगत** कही जाए।

* कुत्ते और शेर में फर्क क्या ?
कुछ भी प्रसंग बनने पर इमीडीएट्ली प्रभु को पुकार करे– वो शेर !
कोई उसे परेशान करे-इरिटेट करे और उस व्यक्ति को दोषी मान कर उसे काटने दौड़े– वो कुत्ता !

* प.पू. काकाजी की परावाणी में आया कि **'अमर गुणातीत भावना'** ! मतलब – गुणातीत भाव को पाए हुए संतों द्वारा व्यक्ति स्वरुप में वह अखंडित रही। आज प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब.... इनके रूप में हम साकार देख रहे हैं। बस इन्हें याद करके इनके वचन से भजन करना है।

* हम सब हमेशा प्रभु के पास भी ऐसा आग्रह रखते हैं कि हम जैसा चाहते हैं वैसा ही हो। पर हम सोचें कि क्या प्रभु हमारे बाप के नौकर हैं जो हमारी मर्जी के मुताबिक ही करा करें ? **अपनी बात मनवाने का आग्रह रखे वह 'सेवक' ही नहीं कहा जाए।** हमें तो बस प्रार्थना

करने का ही अधिकार है कि **प्रभु आपको मेरे हित में जो ठीक लगे वो आप कर दो !**

- **प्रभु का एक स्वभाव है** कि जो सीधा चले उसके साथ वे एकदम सरल रहेंगे... हम एक कदम चलते हैं तो वे सौ कदम चलते हैं। कितने सीधे होंगे प्रभु ? वो विचारें।
- प.पू. काकाजी कहते कि जो ताकत मेरे पास है, आप सभी उस ताकत को पाओ ऐसी हमारी योजना है। प.पू. काकाजी ने कितनी बड़ी बात करी ? हम दिल्ली वाले तो खास पू. काकाजी के बोले जाते हैं; हमें वे ताकत देंगे या नहीं देंगे? यह विचार करना। पर हमें लेनी ही नहीं है। प.पू. काकाजी तो यहां तक बोलते कि आज ब्राह्मीशक्ति मैदान में खुल्ली रखी है। वो शक्ति को हम कैसे पाएं ? तो, जो भी क्रिया करें बस 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करके उन्हें ही राजी करने के लिए करें। इसमें 'स्व' की कॉन्सशियसनेस छोड़ कर काकाजीमय होकर हर काम करें। प.पू. काकाजी को राजी करने की भावना से लग पड़ेंगे तो ब्राह्मीशक्ति हमारे द्वारा भी काम करेगी। पर **हम प्रभु को नहीं, बल्कि भीतर में बैठे अपने 'मावजीभाई' यानि अहम् को राजी करने सब कुछ करते हैं !**
- व्यवहार में भी हम मचेड़-मचेड़ कर, दिमाग लगा-लगा कर जो करने की कोशिश करते रहते हैं, वो 'स्वामिनारायण मंत्र' का जाप करके– संत को आगे रख कर करेंगे, तो सारा काम आसानी से 'यस्, यस्, यस्' होता जाएगा या ना होने का मक़सद अवश्य समझ में आ जाएगा।

✡✡✡

*[प.पू. गुरुजी की हर एक क्रिया केवल प्रभुप्रेरित होती है और वे हम सभी के लिए एक ही उद्यम कर रहे हैं कि हम किसी भी तरह प्रभु की मूर्ति में लय और लीन रहें। इसी भावना से फिलहाल खूब चढ़ा हुआ 'देवदास' का गाना 'डोला रे डोला' की कुछ पंक्तियाँ बच्चों के मुँह से सुनीं, तो उन्हें सहज ही विचार आया कि यदि इसी राग पर भजन बनाएं, तो हमारे सत्संग से जुड़े बच्चे यह गाना भूल जाएंगे और उनके मुँह पर भजन ही चढ़ जाएगा। प.पू. गुरुजी की इस इच्छा को साकार करने और प्रसन्नार्थ **प.पू. दीदी** व **पू. राकेशभाई** ने गुरुपूर्णिमा निमित्त एक ही रात में इस राग पर भजन बना दिया ! इसका एक-एक शब्द खूब गहराई लिए और सत्संग के सार के समान है। आइए उस भजन को मननीय बनाएं...]*

भजन

(राग- डोला रे डोला–'देवदास')

हे भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा...
हे भीगा रे......
हं-हं-हं-हा आ....हां-हां-हां हाआ...
ओ... स्वामी...
जय जय जय स्वामिनारायण-3
रे भीगा रे, भीगा रे, भीगा, जी भीगा, दिल भीगा,
चित्त भीगा, मन भीगा, अंग भीगा -2
काकाजी के रंग में, गुरुजी के संग में
रंगा सब, रंगा सब, काकाजी के रंग रंगा सब,
काकाजी के रंग में, गुरुजी के संग में,
पाई गुणातीत गोद, मिला संबंध अद्‌भुत -2
अब सारा ही गुरु के रंग में डूबो दें
भीगा रे, भीगा रे.... ... ...।।-2
जय जय जय स्वामी जय नारायण हा...।
जय जय जय स्वामी जय नारायण हा...।

मूर्ति प्रभु की जिनके प्राण का आधार है,
आनंदो ब्रह्म मिले प्रभु जो साकार हैं,
मुक्तों के जीवन का मिटाते अंधकार हैं
गुणातीत संत ये तो मोक्ष का द्वार हैं।

हां...हां... आय-आय-आय-आय

प्रत्यक्ष मेरे हो आतम तुम,
जय जय स्वामिनारायण
भव भव के जीवन साथी तुम,
जय जय स्वामिनारायण
मुक्तों के रास रचैया तुम,
जय जय स्वामिनारायण
हर प्रसंग के कर्ता हर्ता तुम,
जय जय स्वामिनारायण
रहो वर्तन, वाणी, विचार में तुम,
तुम तुम तुम तुम तुम तुम तुम
बसो दिल की हर धड़कन में तुम,
धबक धबक तुम-2 तुम तुम तुम
रहो वर्तन, वाणी, विचार में तुम,
बसो दिल की हर धड़कन में तुम,
लें तेरा आधार, रहे तेरा आकार,
अब तेरे ही रंग में हम खुद को डूबो दें,
भीगा रे, भीगा रे, ... ।।
हे....हे...हे...हे....

तेरा संबंधी, ब्रह्म की मूरती,
गुण दोष से पर, मानूं दिव्य सभी
गुरू कृपा से स्थिति पाएंगे जब,
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य
सारा सत्संग दिव्य दिखेगा तब
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य
अपनी कसनी में, रखना तुम...
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य.....
राजी तुम्हें कर लें, एक हों हम...

दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य.....
लें तेरा आधार, रहे तेरा आकार,-2
अब सारा ही गुरु के रंग में डूबो दें
भीगा रे, भीगा रे... ... ... ।।
भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा जी भीगा,
दिल भीगा, चित्त भीगा, मन भीगा, अंग भीगा।
भीगा, भीगा, भीगा, भीगा, भीगा - 4
जय जय स्वामिनारायण-6..... भीगा, भीगा....
हे भीगा रे...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 21.9.2003,	रविवार	–	श्रीजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(2)	दि. 22.9.2003,	सोमवार	–	एकादशी, ब्र. स्व. योगीजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(3)	दि. 23.9.2003,	मंगलवार	–	ब्र. स्व. काकाजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(4)	दि. 24.9.2003,	बुधवार	–	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज– श्राद्ध तिथि
(5)	दि. 26.9.2003,	शुक्रवार	–	नवरात्रे प्रारंभ
(6)	दि. 1.10.2003,	बुधवार	–	प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन
(7)	दि. 5.10.2003,	रविवार	–	दशहरा, प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(8)	दि. 6.10.2003,	सोमवार	–	एकादशी, व्रत
(9)	दि. 10.10.2003,	शुक्रवार	–	शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(10)	दि. 12.10.2003,	रविवार	–	ब्र. स्व. प.पू. जागास्वामी की जन्मजयंती
(11)	दि. 22.10.2003,	बुधवार	–	एकादशी, व्रत
(12)	दि. 23.10.2003,	गुरुवार	–	धनतेरस - लक्ष्मी पूजन
(13)	दि. 25.10.2003,	शनिवार	–	दीवाली, शारदा पूजन
(14)	दि. 26.10.2003,	रविवार	–	अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ
(15)	दि. 27.10.2003,	सोमवार	–	भैयादूज
(16)	दि. 29.10.2003,	बुधवार	–	लाभपंचमी
(17)	दि. 4.11.2003,	मंगलवार	–	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77

TO,

Air Mail
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi